अन्य योजनाओं के पोस्टर चिपकाकर इस जानकारी को ...

रिजनल सोशल साइंस ...

श्रमजीवी महाविद्यालय में 18 फरवरी तक जारी रहेगी

विश्व शैलचित्र कला प्रदर्शनी का आगाज

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
rajasthanpatrika.com

श्रमजीवी में विश्व शैलकला प्रदर्शनी। -पत्रिका

उदयपुर . 'विश्व इतिहास को समझने के लिए शैलचित्रों की धरोहर को बचाना जरूरी है। इसके अलावा पारम्परिक चित्रकला की तकनीक को भी समझना और संरक्षित किया जाना आवश्यक है।' ये विचार कुलपति साउथ एशिया विश्वविद्यालय, दिल्ली की प्रो. कविता शर्मा व्यक्त किए।

वे श्रमजीवी महाविद्यालय में शनिवार को विश्व शैल चित्रकला प्रदर्शनी के उद्घाटन अवसर पर आयोजित संगोष्ठी में बतौर मुख्य अतिथि बोल रही थीं। गौरतलब है कि यह प्रदर्शनी जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ के संघटक साहित्य संस्थान एवं इन्दिरा गांधी नेशनल सेन्टर फॉर आर्ट्स, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वाधान में 18 फरवरी तक जारी रहेगी।

संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए राजस्थान विद्यापीठ के कुलपति कर्नल प्रो. एस.एस.सारंगदेवोत ने कहा कि कला की इस धरोहर की जानकारी जन सामान्य में बहुत कम है। इस प्रदर्शनी से विद्यार्थियों के साथ-साथ शहर के नागरिकों को भी बहुत लाभ होगा।

इस अवसर पर दिल्ली विधान सभा के पूर्व अध्यक्ष व ख्यात इतिहासकार योगानन्द शास्त्री सहित बीज वक्ता आईजीएनसीए आदिदृष्य विभाग के डॉ. बंशीलाल मल्ला ने बताया कि इस प्रदर्शनी में देश सहित एशिया, यूरोप, अफ्रीका व अमेरिका के शैलचित्र प्रदर्शित किये गए हैं, जो 30 से 70 हजार वर्ष प्राचीन हैं।

संगोष्ठी में राजस्थान में शैलचित्र कला के स्थलों पर व्याख्यान देते हुए साहित्य संस्थान के निदेशक प्रो. जीवनसिंह खरकवाल ने कहा कि थार मरूस्थल के अलावा अब अरावली में सभी भागों से शैलचित्र खोजे जा चुके हैं। उन्होंने मोड़ी-बाठेड़ा, आबू रोड़, सीकर, अलवर, निम्बाहेड़ा, कोटा, बूंदी एवं भीलवाड़ा के अनेक शैलचित्र स्लाइड शो में दिखाए। इस मौके पर कई साहित्यकारों व इतिहासकारों सहित शिक्षाविदों व विद्यार्थियों ने भागीदारी निभाई।

सामग्री के कर्मचारी उपस्थित थे। हिन्दुस्तान जिंक देबारी स्मेल्टर द्वारा 30 गांवों में 351 स्वयंसहायता समूहों का गठन कर 5126 महिलाओं को जोडकर लाभान्वित किया जा रहा है।

दुकाने लगी है। उन्होंने बताया कि सरस मेला 25 वर्षो के पश्चात पुनः उदयपुर में आयोजित हो रहा है, इससे पहले यह सरस

उत्पाद बिक्री हेतु उपलब्ध रहेंगे। इस दौरान सांस्कृतिक आयोजन भी होंगे। मेले में आमजन का प्रवेश निःशुल्क रहेगा।

श्रमजीवी महाविद्यालय में विश्व शैलचित्र कला प्रदर्शनी का आगाज

उदयपुर। 'शैलचित्रों की धरोहर को विश्व इतिहास को समझने के लिए बचाना जरूरी है। यह विचार प्रो. कविता शर्मा, कुलपति साउथ एशिया विवि दिल्ली ने श्रमजीवी महाविद्यालय में विश्व के शैलचित्रों की प्रदर्षनी का उद्घाटन करते हुए मुख्य अतिथि के रूप में व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि प्रागैतिहासिक शैलचित्रों के अलावा पारम्परिक चित्रकला कि तकनीक को भी समझना और बचाना आवश्यक है।

यह प्रदर्शनी जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ के संघटक साहित्य संस्थान एवं इन्दिरा गांधी नेशनल सेन्टर फॉर आर्ट्स नई दिल्ली (आई.जी.एन.सी.ए.) के संयुक्त तत्वाधान में एक महीने तक (19 जनवरी से 18 फरवरी तक) आयोजित की जा रही है। अध्यक्षता करते हुए राजस्थान विद्यापीठ के कुलपति कर्नल प्रो. एस.एस.सारंगदेवोत ने कहा कि कला की इस धरोहर की जानकारी जन सामान्य में बहुत कम है। इस प्रदर्शनी से विद्यार्थियों के साथ-साथ शहर के नागरिकों को भी बहुत लाभ होगा। संस्थान इस आयोजन के लिए आई.जी.एन.सी.ए. का भी आभार व्यक्त करता है। उद्घाटन समारोह में विशिष्ट अतिथि दिल्ली विधान सभा के पूर्व अध्यक्ष प्रख्यात इतिहासकार योगानन्द शास्त्री ने कहा कि जिस तरह शैलचित्र कला का अध्ययन किया गया है उसी तरह ऐतिहासिक एवं मध्यकालीन विभिन्न कलाओं का भी अध्ययन आवश्यक है। इस शैलचित्र कला को फोटोग्राफी तथा अन्य साधनों का इस्तेमाल करके संरक्षित करना अति आवश्यक है।

आई.जी.एन.सी.ए. के आदिदृश्य विभाग के प्रोजेक्ट डायरेक्टर डॉ. बंशीलाल मल्ला ने बीज व्कव्य में बताया कि इस प्रदर्शनी में एशिया, यूरोप, अफ्रीका व अमेरिका के शैलचित्र प्रदर्शित किए गए हैं। ऐसे चित्र भी है जो 30 हजार वर्ष प्राचीन भी हैं, इनमें यूरोप की वीनस देवी का चित्र भी है। प्रदर्शनी का आयोजन आई.जी.एन.सी.ए. देश के अनेक विवि में कर चुकी है। इसका मकसद विद्यार्थियों में धरोहर के प्रति जागरूकता पैदा करना है।

संगोष्ठी में राजस्थान में शैलचित्र कला के स्थलों पर व्याख्यान देते हुए साहित्य संस्थान के निदेशक प्रो. जीवनसिंह खरकवाल ने कहा कि थार मरूस्थल के अलावा अब अरावली में सभी भागों से शैलचित्र खोजे जा चुके हैं उन्होंने मोड़ी-बाठेड़ा, आबू रोड़, सीकर, अलवर, निम्बाहेड़ा, कोटा, बूंदी एवं भीलवाड़ा के अनेक शैलचित्र स्लाईड शो में दिखाये व स्पष्ट किया कि इन शैलचित्रों में पाषाणकालीन मनुष्य की जीवन शैली स्पष्ट झलकती है। संगोष्ठी का संचालन डॉ. कुलशेखर व्यास ने किया।

राजकुमार जैन दर्शनाचार्य थे।

आस्ट्रेलिया के फिजियो डेविड बीकलें ने श्रृंखला में अच्छा प्रदर्शन करने वाले साथ देंगे।

श्रमजीवी महाविद्यालय में विश्व शैलचित्र कला प्रदर्शनी का आगाज़

उदयपुर, 19 जनवरी। 'शैलचित्रों की धरोहर को विश्व इतिहास को समझने के लिए बचाना जरूरी है,' ऐसा विचार प्रो. कविता शर्मा, कुलपति साउथ ऐशिया विश्वविद्यालय, दिल्ली ने श्रमजीवी महाविद्यालय में विश्व के शैलचित्रों की प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए मुख्य अतिथि के रूप में व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि प्राग्ऐतिहासिक शैलचित्रों के अलावा पारम्परिक चित्रकला कि तकनीक को भी समझना और बचाना आवश्यक है। यह प्रदर्शनी जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ के संघटक साहित्य संस्थान एवं इन्दिरा गांधी नेशनल सेन्टर फॉर आर्ट्स, नई दिल्ली (आई.जी.एन.सी.ए.) के संयुक्त तत्वाधान में एक महीने तक(19 जनवरी से 18 फरवरी तक) आयोजित की जा रही है। संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए राजस्थान विद्यापीठ के कुलपति कर्नल प्रो. एस.एस.सारंगदेवोत ने कहा कि कला की इस धरोहर की जानकारी जन सामान्य में बहुत कम है इस प्रदर्शनी से विद्यार्थियों के साथ-साथ शहर के नागरिकों को भी बहुत लाभ होगा। संस्थान इस आयोजन के लिए आई.जी.एन.सी.ए. का भी आभार व्यक्त करता है। उद्घाटन समारोह में विशिष्ट अतिथि के रूप में बोलते हुए दिल्ली विधान सभा के पूर्व अध्यक्ष प्रख्यात इतिहासकार योगानन्द शास्त्री ने कहा कि जिस तरह शैलचित्र कला का अध्ययन किया गया है उसी तरह ऐतिहासिक एवं मध्यकालीन विभिन्न कलाओं का भी अध्ययन आवश्यक है इस शैलचित्र कला को फोटोग्राफी तथा अन्य साधनों का इस्तेमाल करके संरक्षित करना अतिआवश्यक है। आई.जी.एन.सी.ए. के आदिदृश्य विभाग के डॉ. बंशीलाल मल्ला जो प्रोजेक्ट डायरेक्टर है ने अपने बीज व्क्तव्य में बताया कि इस प्रदर्शनी में एशिया, यूरोप, अफ्रीका, व अमेरिका के शैलचित्र प्रदर्शित किये गये हैं। प्रदर्शनी में ऐसे चित्र भी है जो 30 हजार वर्ष प्राचीन भी है इनमें यूरोप की वीनस देवी का चित्र भी है इस तरह की प्रदर्शनी आई.जी.एन.सी.ए. देश के अनेक विश्वविद्यालयों में कर चुकी है इसका उद्धेश्य विद्यार्थियों व समाज को धरोहर के प्रति जागरूक करना है। संगोष्ठी में राजस्थान में शैलचित्र कला के स्थलों पर व्याख्यान देते हुए साहित्य संस्थान के निदेशक प्रो. जीवनसिंह खरकवाल ने कहा कि थार मरूस्थल के अलावा अब अरावली में सभी भागों से शैलचित्र खोजे जा चुके हैं उन्होंने मोड़ी-बाठेड़ा, आबू रोड़, सीकर, अलवर, निम्बाहेड़ा, कोटा, बूंदी एवं भीलवाड़ा के अनेक शैलचित्र स्लाईड शो में दिखाये तथा स्पष्ट किया कि इन शैलचित्रों में पाषाणकालीन मनुष्य की जीवन शैली स्पष्ट झलकती है, उन्होंने यह भी बताया कि संस्थान को आई.जी.एन.सी.ए. राजस्थान में सम्पूर्ण शैलचित्रों के अध्ययन हेतु परियोजना पर भी विचार कर रहे हैं।

निक कार्यालय : 126, एबीसी हिरण मगरी सेक्टर-11, चन्द्रदुर्ग उपवन, शाहीबाग के पीछे, उदयपुर 313002 से प्रकाशित नोवा प्रिंटर्स, 5 बागर गली, हाथीपोल से मुद्रि
96 (मो. 9829044996 सम्पादक शैलेश व्यास)। e mail I.D. : jai.rajasthan@hotmail.com, jai.rajasthan72gmail.com

कला की धरोहर प्रदर्शनी से विद्यार्थियों के साथ आमजन को लाभ होगा : सारंगदेवोत

उदयपुर, (कासं)। "शैलचित्रों की धरोहर को विश्व इतिहास को समझने के लिए बचाना जरूरी है।" यह विचार शनिवार को प्रो. कविता शर्मा, कुलपति साउथ ऐशिया विश्वविद्यालय, दिल्ली ने श्रमजीवी महाविद्यालय में विश्व के शैलचित्रों की प्रदर्शनी का उद्घाटन अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में व्यक्त किये।

उन्होंने कहा कि प्राग्ऐतिहासिक

■ विश्व शैलचित्र कला प्रदर्शनी का आगाज

शैलचित्रों के अलावा पारम्परिक चित्रकला कि तकनीक को भी समझना और बचाना आवश्यक है। यह प्रदर्शनी जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ के संघटक साहित्य संस्थान एवं इन्दिरा गांधी नेशनल सेन्टर फॉर आर्ट्स, नई दिल्ली (आई.जी.एन.सी.ए.) के संयुक्त तत्वाधान में एक महीने तक 19 जनवरी से 18 फरवरी तक आयोजित की जा रही है। राजस्थान विद्यापीठ के कुलपति कर्नल प्रो.

उदयपुर में श्रमजीवी महाविद्यालय में विश्व शैलचित्र कला प्रदर्शनी का उद्घाटन प्रो. कविता शर्मा, कुलपति साउथ एशिया विवि, दिल्ली व कुलपति कर्नल प्रो. एस.एस.सारंगदेवोत ने फीता काटकर किया।

एस.एस.सारंगदेवोत ने कहा कि कला की इस धरोहर की जानकारी जन सामान्य में बहुत कम है।

इस प्रदर्शनी से विद्यार्थियों के साथ-साथ शहर के नागरिकों को भी बहुत लाभ होगा। संस्थान इस आयोजन के लिए आई.जी.एन.सी.ए. का भी आभार व्यक्त करता है। दिल्ली विधान सभा के पूर्व अध्यक्ष प्रख्यात इतिहासकार योगानन्द शास्त्री ने कहा कि जिस तरह शैलचित्र कला का अध्ययन किया गया है उसी तरह ऐतिहासिक एवं मध्यकालीन विभिन्न कलाओं का भी अध्ययन आवश्यक है इस शैलचित्र कला को फोटोग्राफी तथा अन्य साधनों का इस्तेमाल करके संरक्षित करना अतिआवश्यक है। आई.जी.एन. सी.ए. के आदिदृश्य विभाग के डॉ. बंशीलाल मल्ला जो प्रोजेक्ट डायरेक्टर है ने अपने बीज वक्तव्य में बताया कि इस प्रदर्शनी में एशिया, यूरोप, अफ्रीका, व अमेरिका के शैलचित्र प्रदर्शित किये गये हैं। प्रदर्शनी में ऐसे चित्र भी है जो 30 हजार वर्ष प्राचीन भी है इनमें यूरोप की वीनस देवी का चित्र भी है इस तरह की प्रदर्शनी आई.जी.एन.सी.ए. देश के अनेक विश्वविद्यालयों में कर चुकी है इसकके उद्देश्य विद्यार्थियों व समाज को धरोहर के प्रति जागरूक करना है।

राजस्थान में शैलचित्र कला के स्थलों पर व्याख्यान देते हुए साहित्य संस्थान के निदेशक प्रो. जीवनसिंह खरकवाल ने कहा कि थार मरूस्थल के अलावा अब अरावली में सभी भागों से शैलचित्र खोजे जा चुके हैं उन्होंने मोडी-बाठेडा, आबू रोड, सीकर, अलवर, निम्बाहेडा, कोटा, बूंदी एवं भीलवाडा के अनेक शैलचित्र स्लाईड शो में दिखाये तथा स्पष्ट किया कि इन शैलचित्रों में पाषाणकालीन मनुष्य की जीवन शैली स्पष्ट झलकती है।

में धकेल उछली कार पर ट्रक आ
गई थी।

पिता को उतारकर एक निजी चिकित्सालय
जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

मा का आगमन, गुरु मा की पूजा, पिच्छो
भेंट, पाद प्रक्षालन, शास्त्र भेंट, वस्त्र

विश्व शैलचित्र कला प्रदर्शनी शुरू

उदयपुर। शैल चित्रों की धरोहर के विश्व इतिहास को समझने के लिए इन्हें बचाना जरूरी है। यह विचार साउथ एशिया विवि की कुलपति प्रो. कविता शर्मा ने श्रमजीवी महाविद्यालय में शैलचित्रों की प्रदर्शनी के उद्घाटन अवसर पर कही। उन्होंने कहा कि प्रागऐतिहासिक शैलचित्रों के अलावा पारम्परिक चित्रकला कि तकनीक को भी समझना और बचाना आवश्यक है। यह प्रदर्शनी जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ के संघटक साहित्य संस्थान एवं इन्दिरा गांधी नेशनल सेन्टर फॉर आर्ट्स, नई दिल्ली के साझे में 19 जनवरी से 18 फरवरी तक जारी रहेगी। अध्यक्षता करते हुए राजस्थान विद्यापीठ के कुलपति कर्नल प्रो. एसएस सारंगदेवोत ने कहा कि कला की इस धरोहर की जानकारी जन सामान्य में बहुत कम है इस प्रदर्शनी से विद्यार्थियों के साथ-साथ शहर के नागरिकों को भी बहुत लाभ होगा। विशिष्ट अतिथि दिल्ली विधान सभा के पूर्व अध्यक्ष योगानन्द शास्त्री ने कहा कि जिस तरह शैलचित्र कला का अध्ययन किया गया है उसी तरह ऐतिहासिक एवं मध्यकालीन विभिन्न कलाओं का भी अध्ययन आवश्यक है। साहित्य संस्थान के निदेशक प्रो. जीवनसिंह खरकवाल ने कहा कि थार मरूस्थल के अलावा अब अरावली में सभी भागों से शैलचित्र खोजे जा चुके हैं। उन्होंने मोड़ी-बाठेड़ा, आबू रोड़, सीकर, अलवर, निम्बाहेड़ा, कोटा, बूंदी एवं भीलवाड़ा के अनेक शैलचित्र स्लाईड शो में दिखाये तथा स्पष्ट किया कि इन शैलचित्रों में पाषाणकालीन मनुष्य की जीवन शैली स्पष्ट झलकती है।

है।

छात्रों ने 99 परसेंटाइल से अधिक अभ्यर्थियों ने आवेदन किया था।

विश्व इतिहास को समझने शैल चित्रों की धरोहरों को बचाना जरूरी : प्रो. कविता

उदयपुर | विश्व के शैलचित्रों की प्रदर्शनी का उद्घाटन शनिवार को श्रमजीवी कॉलेज में हुआ। साउथ एशिया विवि, दिल्ली की कुलपति प्रो. कविता शर्मा ने कहा कि विश्व इतिहास को समझने के लिए शैलचित्रों की धरोहर बचाना जरूरी है। राजस्थान विद्यापीठ के कुलपति प्रो. एस.एस. सारंगदेवोत ने कहा कि कला की इस धरोहर की जानकारी जन सामान्य में बहुत कम है। प्रदर्शनी से विद्यार्थियों के साथ शहर वासियों का भी ज्ञान बढ़ेगा। दिल्ली विधान सभा के पूर्व अध्यक्ष योगानन्द शास्त्री ने कहा कि जिस तरह शैलचित्र कला का अध्ययन किया गया है, उसी तरह ऐतिहासिक एवं मध्यकालीन विभिन्न कलाओं का भी अध्ययन आवश्यक है। प्रदर्शनी एक महीने तक चलेगी।

देबारी में सखी प्रेरणा फेडरेशन का गठन

उदयपुर | मंजरी फाउंडेशन

चित्रकला प्रतियोगिता में जुटे विद्यार्थी

उदयपुर. विद्यापीठ विवि के संघटक साहित्य संस्थान एवं इन्दिरा गांधी नेशनल सेंटर फॉर आर्ट्स, नई दिल्ली के तत्वावधान में हुई विश्व शैल चित्र कला प्रदर्शनी के तहत सोमवार को चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। पहले दिन आयोजित प्रतियोगिता में 50 विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम समापन पर प्रदर्शनी के स्थानीय समन्वयक डॉ. कुलशेखर व कृष्णपालसिंह ने विद्यार्थियों में प्रमाणपत्र वितरित किए। आइजीसीएनए के प्रवीण सीके व दिलीप कुमार ने बताया कि प्रतियोगिता मंगलवार को भी जारी रहेगी।

चर्चा करना था।

विश्व शैलचित्र कला प्रदर्शनी में छात्र-छात्राओं की चित्रकला प्रतियोगिता

उदयपुर, 21 जनवरी। जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड-टू-बी यूनिवर्सिटी), उदयपुर के संघटक साहित्य संस्थान एवं इन्दिरा गाँधी नेशनल सेन्टर फॉर आर्ट्स, नई दिल्ली (आई.जी.एन.सी.ए.) के संयुक्त तत्वावधान में एक माह तक (19 जनवरी से 18 फरवरी, 2019 तक) आयोजित ''विश्व शैलचित्र कला प्रदर्शनी'' के अन्तर्गत छात्र-छात्राओं की चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें प्रथम दिवस विभिन्न विद्यालयों के प%चास छात्र-छात्राओं ने भाग लिया है। इस प्रतियोगिता में भाग लेने वाले विद्यार्थियों को आवश्यक सामग्री आयोजकों की ओर से प्रदान की गई।

प्रतियोगिता के समापन पर ''विश्व शैलचित्र कला प्रदर्शनी'' के स्थानीय समन्वयक डॉ. कुलशेखर व्यास एवं डॉ. कृष्णपालसिंह ने शैलचित्र कला के इतिहास की जानकारी देते हुए भाग लेने वाले सभी विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र प्रदान किये। समापन कार्यक्रम में आई.जी.एन.सी.ए. नई दिल्ली के डॉ. प्रवीण सी.के. एवं डॉ. दिलीप कुमार ने बताया की विद्यार्थियों की प्रतियोगिता दिनांक 22 जनवरी को भी आयोजित की जाएगी।

समापन समारोह में शोयब कुरेशी, नारायण पालीवाल, ममता शर्मा, धरेश पण्डया, अशफाक, विष्णु सावनानी, डॉ. महेश आमेटा, अख्तर हुसैन, शीशराम बड़सरा, मोहन गुर्जर, अनिता पंचोली, के साथ विद्यार्थियों ने भाग लिया।

राउमावि लोयरा मे स्कॉलरशिप हेतु कम्प्यूटर प्रतिभा खोज परीक्षा आयोजित

उदयपुर, 21 जनवरी। मेवाड़ परीक्षा आयोजित हुई प्रधानाचार्य अंजू

विश्व शैलचित्र कला प्रदर्शनी में छात्र-छात्राओं की चित्रकला प्रतियोगिता

उदयपुर। जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड-टू-बी यूनिवर्सिटी), उदयपुर के संघटक साहित्य संस्थान एवं इन्दिरा गाँधी नेषनल सेन्टर फॉर आर्ट्स, नई दिल्ली (आई.जी.एन.सी.ए.) के संयुक्त तत्वावधान में एक माह तक (19 जनवरी से 18 फरवरी तक) आयोजित विश्व शैलचित्र कला प्रदर्शनी के अन्तर्गत छात्र-छात्राओं की चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें प्रथम दिवस विभिन्न विद्यालयों के पचास छात्र-छात्राओं ने भाग लिया है। इस प्रतियोगिता में भाग लेने वाले विद्यार्थियों को आवश्यक सामग्री आयोजकों की ओर से प्रदान की गई।

प्रतियोगिता के समापन पर विश्व शैलचित्र कला प्रदर्शनी के स्थानीय समन्वयक डॉ. कुलशेखर व्यास एवं डॉ. कृष्णपालसिंह ने शैलचित्र कला के इतिहास की जानकारी देते हुए भाग लेने वाले सभी विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र प्रदान किये। समापन कार्यक्रम में आई.जी.एन.सी.ए. नई दिल्ली के डॉ. प्रवीण सी.के. एवं डॉ. दिलीप कुमार ने बताया की विद्यार्थियों की प्रतियोगिता 22 जनवरी को भी आयोजित की जाएगी।

जनक

उदयपु
आनंदी ने सो
के अधिकारि
विभागीय यो
प्रगति के सं
जनकल्याण
से पूरा करने
बैठक मे
कार्यकारी अ
अतिरिक्त जिल
कुमार सहित
अधिकारी मौ
विभागवार का
में चर्चा करते
पानी, सड़क

हर काल में निखरा इतिहास

लिया

लेकसिटी में देख सकेंगे 6 महाद्वीपों के 70 हजार साल पुराने भित्ति चित्र

रोमांच जगाएगा आदिमानव का अनूठा कला संसार

राजस्थान में पहली बार होगी 'रॉक आर्ट एग्जीबिशन'

देख सकेंगे 30 से 70 हजार साल पुराने चित्र 1 माह तक

पत्रिका PLUS रिपोर्टर

उदयपुर • यदि आपसे पूछा जाए कि जिराफ और शुतुरमुर्ग कहां पाए जाते हैं तो आपका जवाब अफ्रीका होगा। ये बिल्कुल सही भी है। लेकिन, करीब 30 से 70 हजार साल पहले ये दोनों ही भारत में भी पाए जाते थे। इसका प्रमाण आदिमानव द्वारा बनाए गए चित्रों में मिला है जो कि मध्यप्रदेश के भीम बैठका की गुफाओं में है। वैसे, इस तरह के अनूठे चित्र दुनिया भर में पाई गई आदिमानव की गुफाओं में हैं। इन्हें देखने जाना हर किसी के लिए संभव नहीं हो पाता है। लेकिन, दुनिया के 6 महाद्वीपों से जुटाए गए ऐसे चित्र अब उदयपुर में देखने को मिलेंगे।

दरअसल, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र एवं जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ के संघटक साहित्य संस्थान की ओर से राजस्थान में पहली बार विश्व भित्ति चित्र (रॉक आर्ट) प्रदर्शनी लगाई जा रही है। ये प्रदर्शनी 19 जनवरी से 20 फरवरी तक आयोजित की जाएगी।

आदिमानव की ओर से बनाए गए शैल चित्र। पत्रिका

मुड़ी गांव में भी मिले हैं शैल चित्र

साहित्य संस्थान निदेशक प्रो. जीवनसिंह खरकवाल ने बताया कि शैलकला (भित्ति चित्रांकन) सबसे पहले एशिया में भारत के मिर्जापुर में खोजी गई। पूरी दुनिया में सबसे अधिक चित्र भी भारत में मिले हैं। विद्यापीठ की ओर से कराई गई खोज में उदयपुर के बाठेरड़ा के पास मुड़ी गांव और चित्तौड़गढ़ के निम्बाहेड़ा से भी कई चित्र मिले हैं। ये चित्र भी इस प्रदर्शनी में प्रदर्शित किए जाएंगे। इसके अलावा भारत में मुख्यतः भीम बैठका, बूंदी, सुंदरगढ़, ईडर, साबरकांठा, बनास कांठा, पुरूलिया, हजारीबाग, पंचमहल एवं मिर्जापुर से प्राप्त चित्र शामिल रहेंगे। वहीं, कजाकिस्तान, लीबिया, अजरबैजान, फ्रांस, इस्राइल, पाकिस्तान, आस्ट्रेलिया, चीन, जापान, कैलिफोर्निया आदि देशों के चित्र भी प्रदर्शित किए जाएंगे।

इसलिए चुना उदयपुर को

इस अनूठी चित्र प्रदर्शनी का उदयपुर में आयोजन होने की वजह राजस्थान विद्यापीठ के साहित्य संस्थान की ओर किए जा रहे शोध हैं। इनके शोध पूर्व में साहित्य संस्थान की ओर से किए जा चुके हैं। वहीं, इस तरह की प्रदर्शनी उदयपुर और राजस्थान में अब तक नहीं हुई है। इसलिए उदयपुर में ये आयोजन इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के साझे में होना तय हुआ।

सबसे ज्यादा चित्र शिकार के

खरकवाल ने बताया कि दुनियाभर में जो शैलकला के चित्र मिले हैं, उनमें सबसे अधिक शिकार के चित्र हैं। इनमें आदिमानव को शिकार करते हुए देखा जा सकता है। इसके अलावा यूरोप और एशिया में पाए गए चित्रों में जो बड़ा अंतर है, वह उनके आकार का होता है। यूरोपियन चित्रों का आकार विशाल होता है। जबकि भारत के चित्र आकार में छोटे, लेकिन उनके विषय बड़े होते हैं। वहीं, अधिकतर चित्रों में जानवरों का आकार बड़ा होता था। इससे अंदाजा लगाया जाता है कि उस समय के जानवर आकार में प्रायः बड़े होते थे। वहीं, भारत के चित्रों में जिराफ व शुतुरमुर्ग के चित्र मिले हैं जिनसे उस समय उनके यहां पाए जाने का प्रमाण मिलता है।

नई पीढ़ी तक पहुंचे जानकारी

प्रदर्शनी के संयोजक कुलशेखर व्यास ने बताया कि इस प्रदर्शनी का मुख्य उद्देश्य लोगों तक, विशेषकर स्कूली विद्यार्थियों को इस अमूल्य निधि की जानकारी देना है। प्रदर्शनी के दौरान स्कूली विद्यार्थियों के लिए 21 व 22 जनवरी को कार्यशाला व चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन भी किया जाएगा। वहीं, आदिमानव जिस तरह प्राकृतिक रंगों से चित्र बनाते थे, उसी तरह प्राकृतिक रंगों से चित्र बनाना सिखाया जाएगा। जिनसे वे खुद भी वैसे ही चित्र बना सकेंगे।

पाठकों ने कैप्शन के जरिए अभिव्यक्त किए भाव

हेल्थ टॉक शो स्वस्थ राजस्थान- स्मार्ट राजस्थानी 18 को

विशेषज्ञ देंगे आधुनिक चिकित्सा पद्धति की जानकारी